Volume-7, No. 1 Feb.-2020, pp. Hin.01-04

शिक्षा संकाय में नामांकित विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 दिनेश प्रसाद मिश्र,
एसो0प्रो0–शिक्षा संकाय
कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान,
सुलतानपुर (उ0प्र0) भारत।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि
आदि काल से ही भारत ज्ञान का प्रणेता, पोषक और प्ररहरी रहा है। शिष्य ज्ञान प्राप्ति हेतु गुरू आश्रम में जाते थे। राजा हो सामान्य जन सभी के बच्चे शिक्षा प्राप्ति हेतु गुरू गृह जाते थे गुरू आश्रम में सभी के साथ समान आचरण व्यवहार होता था। इस बात की पुष्टि तुलसी दास जी की इन पंक्तियों से भी हो जाती है– ''गुरू गृह गये पढ़न रघुराई। अल्प काल सब विद्या पाई ।।'' गुरू –शिष्य प्रणाली का ऐसा अनुपम उदाहरण संसार के किसी भी अन्य देश में देखने को नहीं मिलता गुरू निःश्रेयस भाव से अपने अनुभव और सिद्धि शक्ति से छात्रों का मार्ग दर्शन करते थे। गुरू के सानिध्य सम्पर्क में रहकर शिष्य अपने ज्ञान में नवीनता और परिक्वता लाकर आपना जीवन विकास करते थे।

मुख्य शब्द– सामाजिक परिपक्वता, शिक्षा संकाय, कला वर्ग, विज्ञान वर्ग

आदि काल से ही भारत ज्ञान का प्रणेता, पोषक और प्रहरी रहा है। शिष्य ज्ञान प्राप्ति हेतु गुरू आश्रम में जाते थे। राजा हो सामान्य जन सभी के बच्चे शिक्षा प्राप्ति हेतु गुरू गृह जाते थे गुरू आश्रम में सभी के साथ समान आचरण व्यवहार होता था। इस बात की पुष्टि तुलसी दास जी की इन पंक्तियों से भी हो जाती है– **''गुरू गृह गये पढ़न रघुराई। अल्प काल सब विद्या पाई।।''** गुरू–शिष्य प्रणाली का ऐसा अनुपम उदाहरण संसार के किसी भी अन्य देश में देखने को नहीं मिलता गुरू निः श्रेयस भाव से अपने अनुभव और सिद्धि शक्ति से छात्रों का मार्ग दर्शन करते थे। गुरू के सानिध्य सम्पर्क में रहकर शिष्य अपने ज्ञान में नवीनता और परिक्वता लाकर अपना जीवन विकास करते थे। शिक्षा प्रणाली की इसी भावना को आधार बनाकर पाश्चात्य विचारक बटलर ने शिक्षा के बारे में लिखा है कि– ''शिक्षा एक ऐसी अनवरत प्रक्रिया है। जिसमें समाज के अधिक परिपक्व और अनुभवी लोग समाज के कम परिपक्व लोगों को अधिक परिपक्व बनाने का प्रयास करते है और उनके ज्ञान का विकास करते है।'' वास्तव में मानव एक मनोशारीरिक प्राणी है वह जन्मतः बीज रूप में इन शक्तियों को लेकर पैदा होता है, और वातावरण की निजता या सम्पर्क में आकर अपनी इन शक्तियों का प्रस्फुटन या विकास करता है। जिसके कारण उसके व्यवहार में उत्रोत्तर परिवर्तन देखने को मिलता है मनोविज्ञान की भाषा मे इसे ही अधिगम कहा जाता है। परिपक्वता सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य अंग एवं कारक है। इससे सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है और सीखे गये ज्ञान में स्थायित्व आता है। परिपक्वता का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक क्षमता के विकास से है। इस विकास के फलस्वरूप व्यक्ति की उत्तरजीविता शक्ति में भी वृद्धि होती है। उसके व्यवहार में उतरोत्तर परिवर्तन होता जाता है जिससे कि वह अपने भौतिक व सामाजिक वातावरण से बेहतर सामंजस्य स्थापित कर सके। अधिगम की क्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है, इस प्रकार व्यक्ति का विकास भी अनवरत होता रहता है। परिपक्वता भी व्यक्ति के इस सतत विकास के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी रहती है। परिपक्वता का अर्थ है कि विकास की एक निश्चित अवस्था में व्यक्ति उन कार्यो को करने के योग्य हो जाता है जो इससे पूर्व करने में समर्थ नहीं था। राबर्ट केगन ने परिपक्वता के कई प्रकार गिनाये हैं, जैसे–शैक्षिक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता, सांवेगिक परिपक्वता, आनुभाविक परिपक्वता आदि।

प्रस्तुत अध्ययन में परिपक्वता से आशय सामाजिक परिपक्वता से है। जो हमें यह बताती है कि किस स्तर तक लोग उस सामाजिक संसार को समझते हैं जिसमें वे रहते हैं। एक सर्वोच्च शिखर पर सामाजिक परिपक्वता से अर्थ सामाजिक कार्य व्यवहार सम्बन्धी

अनुभवों के अर्जन से है जिसकी सहायता से वह सामाजिक कौशलों को सीखकर अपना आचरण व्यवहार करता है। सामाजिक कौशल के अन्तर्गत वैयक्तिक पूर्णता, अन्तर्वैक्तिक पूर्णता, सामाजिक समझ, सामाजिक न्याय की भावना समाज में हो रहें परिवर्तनों के प्रति सहज स्वीकारोक्ति एवं सामाजिक दायित्वों के प्रति भूमिका निर्वहन आदि सम्मिलित होते है। इन कौशलों के अर्जन से व्यक्ति का सामाजिक विकास होता है, वह समाज की संरचना, ढांचा और व्यवस्था को बनाये रखने वाले गुणों एवं, विशेषताओं को भली भांति सीख व समझकर परिवार, मित्र, समुदाय व अन्ततः समाज के साथ मधुर एवं सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है।

प्रयुक्त चरों का परिभाषीकरण

सामाजिक परिपक्वता सामाजिक परिपक्वता से अभिप्राय सामाजिक कौशलों के अर्जन एवं प्रयोग करने की सामर्थ्य से है। जिससे वह सामाजिक क्रिया कलापों में भाग लेकर स्वयं में श्रेष्ठ एवं सकारात्मक सामाजिक अभिवृत्तियों का विकास कर सकें।

शिक्षा संकाय

इसके अन्तर्गत सामान्य शिक्षा से इतर विशिष्ट एवं विशेषीकृत पाठ्यक्रम सम्मिलित होता है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी शिक्षण कार्य की बारीकियों से परिचित होकर शिक्षण कार्य की योग्यताएँ और कौशल अर्जित करते हैं। प्रस्ततु अध्ययन में शिक्षा संकाय से अभिप्राय बी0एड्0 पाठ्यक्रम से है।

कला वर्ग

यह सामान्य व उदार शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रम होता है। इसके अन्तर्गत छात्र–छात्राएँ अपनी नौकरी या पेशे से सम्बन्धित आवश्यक आहर्ताएँ अर्जित करते है, इस संकाय में पढ़ाये जाने वाले प्रमुख विषय हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि हैं।

विज्ञान वर्ग

इसमें भी उदार एवं सामान्य शिक्षा से जुड़े पाठ्यक्रम का अध्ययन किया जाता है। कला वर्ग से यह इस मायने में अलग होता है कि इसमे पढ़ाये जाने वाले विषयों का स्वरूप पदार्थ वादी व तकनीकी प्रधान होता है जबकि कला वर्ग के विषयों की प्रकृति सामाजिक होती है। इस वर्ग में पढ़ाये जाने वाले विषयों में गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान आदि आते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे जितना स्वयं से समायोजित होने की आवश्यकता होती है उतनी ही अपने सामाजिक परिवेश से जुड़ी बातों के साथ भी उसे उचित ताल–मेल बनाये रखना होता है। इस हेतु वह सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं आदि को सीखकर अपना समाजीकरण करता है। व्यक्ति का समाजीकरण जितना उच्च कोटि का होगा उसके अन्दर उतनी अधिक मात्रा में सामाजिक कुशलता का विकास होगा और इन सबसे उसकी सामाजिक परिपक्वता में वृद्धि होगी। वर्तमान समय में शिक्षा जगत में नई–नई तकनीकें प्रवेश कर रही हैं जिससे प्रतिस्पर्धा का दायरा और स्तर दोनों बढ़ता जा रहा है। ऐस में शिक्षकों को भी अपनी पहचान बनाने एवं सफलता अर्जित करने हेतु कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। कभी–कभी उसको इसमें सफलता मिलती है तो कभी–कभी उसे अनचाही असफलता का भी सामना करना पड़ता है। वस्तुतः शिक्षक जीवन में तरह–तरह की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक नैतिक तथा संज्ञानात्मक परिस्थितियों में कार्य करना होता है। ये परिस्थितियाँ उसके आचरण व्यवहार को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। जिससे कभी–कभी ये उसकी सामाजिक समायोजन शीलता में बाधा भी उत्पन्न करती हैं। यही कारण है कि शिक्षक प्रशिक्षुओं को शिक्षण कार्य की बारीकियों से परिचित कराकर उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार किया जाता है। जिससे की वे शिक्षण कार्य प्रभावशाली रूप में कर सकें। अन्य व्यवसायिक पाठ्यक्रमों की तुलना में बी0एड्0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अपनी शैक्षणिक भूमिका के साथ–साथ सामाजिक दायित्वों और क्रिया–कलापों के प्रति भी सजग रहना पड़ता है। जिससे कि वे जब शिक्षक बने तो अपने छात्रों में भी सामाजिक गुणों मूल्यों आदर्शो, परम्पराओं, संस्कृति के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास कर सकें। इन सब कृत्यों हेतु प्रथमतः उन्हें स्वयं सामाजिक कार्यो के प्रति समझ एवं सामाजिक परिपक्वता अर्जित करनी होती है। अद्यतन सामाजिक वातावरण अतिशय भौतिकता वादी हो गया है। मूल्यों, आदर्शो, परम्पराओं आदि की सब जगह अवहेलना हो रही है। इन सब के पीछे कहीं शिक्षकों की सामाजिक अपरिपक्वता तो नहीं जिससे कि वे सामाजिक रूप से कुशल नागरिकों का निर्माण करने में अक्षम सिद्ध हो रहे हैं। शिक्षण–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में नामांकित होकर शिक्षण व्यवसाय की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों में पर्याप्त मात्रा में सामाजिक परिपक्वता का अर्जन हो पा रहा है कि नहीं क्योंकि यही भविष्य में शिक्षक बनकर छात्रों में सामाजिक कुशलता का विकास करेगें इन्हीं सब जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध प्रपत्र में अध्ययन किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक और छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता की तुलना करना।

1.1 शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की सामाजिक परिपक्वता की तुलना करना।

1.2 शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग कि छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता की तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक और छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.1 शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.2 शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसांधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतापगढ़ जनपद में स्थित महविद्यालयों में संचलित बी0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि से चयनित किया गया है। जिसमें 50 छात्राध्यापक (25 कला वर्ग +25 विज्ञान वर्ग) तथा 50 छात्राध्यापिकाएँ (25 कला वर्ग +25 विज्ञान वर्ग) सम्मिलित हैं।

प्रयुक्त शोध उपकरण एंव सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ0 यशबीर सिन्हा और डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया है। साथ ही संकलित प्रदत्तों के सार्थक विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–अनुपात व अन्य सांख्यिकीय प्रविधियाँ आवश्यकतानुसार प्रयुक्त की गयी हैं।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी न0–1

शिक्षा संकाय में नामांकित कला एंव विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता का सांख्यिकीय विश्लेषण–

समूह	न्यादर्श का आकार (N)	मध्य मान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी–अनुपात	सारणीमान 0.05 सार्थकता स्तर पर
कला वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाएँ	50	133.30	12.54	6.49	2.32	2.79	1.98 (df) 98
विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाएँ	50	126.81	10.68				

प्रस्तुत सारणी में शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता के माध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात 2.79 प्राप्त हुआ जो मुक्तांश (df) 98 पर तथा 0.05 सार्थक स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात के सराणीमान 1.98 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना 01 अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक और छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है।

चूँकि कला वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के समूह का मध्यमान विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के मध्यमान से अधिक है अतः इस कथन की सांख्यिकीय वैधता है कि कला वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं से तुलनात्मक रूप में अधिक है।

सारणी 1.1

शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की सामाजिक परिपक्वता का सांख्यिकीय विश्लेषण–

समूह	न्यादर्श का आकार (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी–अनुपात	सारणीमान 0.05 सार्थकता स्तर पर
कला वर्ग के छात्राध्यापक	25	129.47	8.56	6.96	2.52	2.76	2.02 (df)48
विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक	25	122.51	9.32				

प्रस्तुत साराणी में शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यपकों की सामाजिक परिपक्वता के माध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात 2.76 प्राप्त हुआ जो मुक्तांश (df)48 पर तथा 0.05 सारर्थक स्तर के लिए दो पुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात के सारणीमान 2.02 से अधिक है। इस लिए शून्य परिपकल्पना 1.1 अस्वीकृत की जाती है, और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है।

चूँकि कला वर्ग के छात्राध्यापकों के समूह का मध्यमान विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों के मध्यामान से अधिक है अतः इस कथन की सांख्यिकीय वैधता है कि कला वर्ग के छात्राध्यापकों की सामाजिक परिपक्वता विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों से तुलनत्मक रूप में अधिक है।

सारणी–1.2

शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह	न्यादर्श का आकार (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर D= M1-M2	मानक त्रुटि	टी–अनुपात	सारणी मान 0.05 सार्थकता स्तर पर
कला वर्ग के छात्राध्यापक	25	128.31	6.90	6.03	2.12	2.84	2.02 (df) 48
विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक	25	122.28	8.05				

प्रस्तुत सारणी में शिक्षा संकाय में नामांकित कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता के माध्यमानों के अन्तर का टी अनुपात 2.84 है जो मुक्तांश (df) 48 पर तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए दो पुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात के सारणीमान 2.02 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना 1.2 अस्वीकृत की जाती है, और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है।

चूँकि कला वर्ग की छात्राध्यापिकाओं के समूह का मध्यमान विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं के मध्यामान से अधिक है। इसलिए इस कथन की सांख्यिकीय वैधता है कि कला वर्ग की छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं का तुलनात्मक रूप में अधिक है।

निष्कर्ष

शोधार्थी ने अपने अध्ययन में विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक परिपक्वता का स्तर कला वर्ग के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की तुलना में न्युन पाया उनमें सामाजिक दायित्वों एवं क्रियाओं के स्थान पर वैयक्तिक कार्यो के प्रति अधिक संचेतना प्राप्त हुई। विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की सामाजिक परिपक्वता विज्ञान वर्ग की ही छात्राध्यापिकाओं से उच्च पायी गयी इसके सम्भावित कारणों में छात्राध्यापकों का वाह्य वातावरण से अधिक सम्पर्क होना उनको आत्याभिव्यक्ति के अधिक अवसर प्राप्त होना आदि हो सकता है। जबकि छात्राध्यापिकाओं में अपने शैक्षिक दायित्वों के प्रति ही अधिक सचेत होने से कम सामाजिक सहभाग कर पाना, समाज मे उनकी समुचित स्वीकारोक्ति न हो पाना छात्राध्यापिकाओं का अन्तर्मुखी व्यक्तित्व आदि परिवेशीय कारण हो सकते है।

शोध अध्ययन में विज्ञान वर्ग एंव कला वर्ग के छात्राध्यापकों की सामाजिक परिपक्वता सम्बन्धी भिन्नताएँ भी दृष्टिगत हुई कला वर्ग के छात्राध्यापकों में सामाजिक परिपक्वता का स्तर उच्च दिखाई दिया जिसके सम्भावित कारणों में दायित्व सम्बन्धी पाठ्यक्रमीय स्थिति , समाज के साथ सक्रिय भागीदारी उनका बहिर्मुखी व्यक्तित्व आदि कारण हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय के0पी0 : शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
2. मुखर्जी आर0 : द डेवलपमेण्ट ऑफ सोसल थाट, वाकिस फेफर एण्ड सिमन प्रा0 लि0 मुम्बई।
3. ओड एल0 के0 : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, हिन्दी ग्रन्थ आकदमी जयपुर राजस्थान।
4. मिश्र के0एस0 : कान्सेप्ट, मेजरमेण्ट ऑफ सोसल एण्ड इमोशनल मेच्योरिटी, अमिताभ प्रकाशन इलाहाबाद।
5. सारस्वत मालती : शिक्षा मनोविज्ञान की रूप रेखा, आलोक प्रकाशन लखनऊ।
6. गुप्ता एस0पी0 : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
7. गुप्ता एस0 पी0 : व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकी शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
8. शर्मा आर0ए0 : शिक्षा अनुसांधान, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।